

भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन

जी भवानी

शोधार्थी - हिंदी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै

Email - bhavani1878@gmail.com

आमुख: भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में सामाजिक जीवन का अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज की विभिन्न समस्याओं, परंपराओं, रूढ़ियों तथा मानवीय संबंधों को गहराई से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों और मानव जीवन के संघर्षों का स्पष्ट वर्णन दिखाई देता है। भगवती चरण वर्मा ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं, आर्थिक असमानता, नैतिक पतन, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रेम, विवाह तथा सामाजिक मूल्यों को प्रमुखता दी है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास "चित्रलेखा" में पाप और पुण्य की अवधारणा के माध्यम से समाज और मानव मन का विश्लेषण किया गया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों की स्थिति का भी मार्मिक चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज में महिलाओं के संघर्ष, त्याग और उनकी भावनाओं को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया। साथ ही उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों पर भी प्रहार किया। भगवती चरण वर्मा का सामाजिक दृष्टिकोण यथार्थवादी था। वे समाज की सच्चाइयों को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाले साहित्य भी हैं। इस प्रकार, उनके उपन्यासों में सामाजिक जीवन का व्यापक और प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है।

बीज शब्द: हिंदी साहित्य में भगवती चरण वर्मा, सामाजिक दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक दृष्टिकोण।

हिंदी साहित्य के सामाजिक उपन्यासकारों में भगवती चरण वर्मा जी का विशेष योगदान रहा। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास भारतीय समाज का यथार्थ दर्पण हैं। उन्होंने सामाजिक जीवन के विविध पक्षों—रीति-रिवाजों, मान्यताओं, संघर्षों, नैतिक मूल्यों तथा मानवीय संबंधों—का प्रभावशाली चित्रण किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की और पूर्व की सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। उनके उपन्यास 'चित्रलेखा', 'तीनवर्ष', 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते', 'आखिरी दांव', 'अपने खिलौने', 'भूले बिसरे चित्र', 'वह फिर नहीं आई', 'सामर्थ्य और सीमा', 'थके पाँव', 'सीधी सच्ची बातें', 'सबहि नचावत राम गोसाई' तथा 'प्रश्न और मरीचिका' आदि उपन्यासों में सामाजिक जीवन और बढ़ते समस्याओं का चित्रण किया है। उनके उपन्यास में मानव जीवन का यथार्थ चित्रण और रमणीय अनुभूति प्रस्तुत होता है।

भगवती चरण वर्मा सामाजिक उपन्यासकार हैं। उनका लगाव सामाजिक संगठन के प्रति होने के कारण उन्होंने समाज की छोटी-छोटी समस्याओं को अपनी वैयक्तिक समझकर अपने उपन्यास साहित्य में विषय बनाया है। उन्हें प्रेमचंद परंपरा का उपन्यासकार माना गया है। उनके उपन्यासों का उद्देश्य सामाजिक होने के कारण उन्हें प्रेमचंद की प्रतिछवि भी कहा जाता है। उन्होंने भारतीय समाज को निकटता से देखा है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक जीवन और परिवर्तनशील मानव मूल्यों और सामाजिक समस्याओं को यथार्थ ढंग से चित्रण किया है। अतः उन्होंने सामाजिक विषयों के प्रति विवेचन करना आवश्यक माना है।

भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'आखिरी दांव' में वर्ण भेद पर आधारित समाज की अभिव्यक्ति किया है। इसका चित्रण इस उपन्यास में चमेली और रामेश्वर के माध्यम से दिया है। विजातीय जाति की चमेली जब रामेश्वर का खाना पकाने के लिए संकोच करती हैं तब रामेश्वर चमेली से कहता है कि, "तो तू समझती है कि मैं तेरे हाथ का पकाया खाऊंगा नाहीं।"¹ रामेश्वर का यह कथन से उनका वर्ग वेद मानसिकता का चित्रण प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था प्रथा का चित्रण 'टेढ़े मेढ़े रास्ते', 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'प्रश्न और मरीचिका' आदि उपन्यास में प्रकर रूप से चित्रित हुआ है। 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' उपन्यास में वर्ण भेद जैसे सामाजिक कुप्रथा का बहिष्कार का चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का उमानाथ जब जर्मनी से वापस लौटता है तब उसके पिता रामनाथ तिवारी सामाजिक बहिष्कार से मुक्ति पाने के हेतु उसके सामने प्रायश्चित्त का प्रयोजन रखता है। तब उमानाथ कहता है कि "यह सब स्वाँग आप ही को मुबारक रहे ददुआ। ये कुत्ते से भी गए बीते आदमी हमारे घर में आकर हमारा अपमान करें और आप सब कुछ चुपचाप देखते रहे मुझे आप पर आश्चर्य हो रहा है।"²

छुआ-छूत के कारण जाती विभाजन पद्धति विकसित होने लगी। भगवती चरण वर्मा ने इस स्थिति को पहचान कर अपने उपन्यासों में अंकित किया है। 'भूले बिसरे चित्र' में पशुओं से भी मानव का घृणास्पद मानसिकता प्रस्तुत किया है। इसका प्रमाण है इस उपन्यास का गंगा प्रसाद। गंगा प्रसाद के साथ उठने बैठने की बात तो दूरी रही किंतु वह उनको अपने कमरे में प्रवेश तक निषेध मानते हुए गेंदालाल को कहते हैं कि "चमार! तुम यहां, इस कमरे में कैसे घुस आए? निकलो यहां से निकलो।"³

भगवती चरण वर्मा के अधिकांश उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि का आधार से चित्रण हुआ है। उसमें पारिवारिक जीवन का चित्रण प्रधान रूप से प्रधानरूप से नहीं हुआ है। लेकिन उनके उपन्यास 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' तथा 'भूले बिसरे चित्र' में पारिवारिक परिस्थितियों का चित्रण मिलती है। 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में पारिवारिक विघटन का चित्रण प्रस्तुत हुआ इस उपन्यास के मुंशी शिवलाल अपने भाई राधेलाल की पत्नी का अधिपति स्वीकारते हैं और छिनकी की बातों पर ध्यान न देकर कहते हैं कि, "यदि छोड़ भी बहू कोई पराया तोड़े ही है, घर की मालकिन है, जैसा ठीक समझती है, वैसा करती हैं।"⁴ इसे स्पष्ट होता है कि शिवलाल जैसे पात्रों के माध्यम से परिवार को संयुक्त बना रखने का प्रयास किया है।

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के सफल एवं संतुष्टि जीवन के लिए वैवाहिक व्यवस्था का निर्माण किया गया है। लेकिन आधुनिक युवा पीढ़ी की दृष्टि में विवाह एक कमिटमेंट मात्र रह गया है इससे विवाह के प्रति युवा की अरुचि बढ़ती जा रही है। इसका चित्रण भगवती चरण वर्मा ने 'थके पांव' उपन्यास में चित्रित किया हैं। इस उपन्यासकार स्त्री पात्र माया अपनी आर्थिक विपन्नता को अच्छी तरह समझते हुए वह अपनी मां से कहते हैं की, "अम्मा मुझे विवाह नहीं करना देख रही हूं, तुम्हारी हालत, भौजी की हालत, बुआ जी की हालत। विवाह के अर्थ है स्त्री को नर्क में ढकेल देना और इस नरक में आप लोग मुझे नहीं ढकेल सकते।"⁵ एक और 'थके पांव' की माया विवाह पद्धति को घृणास्पद दृष्टि से देखती है तो दूसरी ओर 'तीन वर्ष' का अजीत विवाह को महत्व देता है और उसे आवश्यक समझता है और वह उसे अपनी सामाजिक जिम्मेदारी की दृष्टि से कर्तव्य समझता है। अजीत कहता है कि स्त्री को आश्चर्य देना उसकी रक्षा करना यह पुरुष का कर्तव्य है इसलिए प्रत्येक पुरुष का कर्तव्य है समझ गया है कि यह एक स्त्री को आश्रय देना है। सृष्टि में पुरुष अपूर्ण है क्योंकि उसके महत्व पर कौड़ीभूत होने के कारण उसमें दया, त्याग, सहानुभूति आदि की कोमल भावनाओं का अभाव है और साथ ही स्त्री की अपूर्ण है, क्योंकि उसमें अधिकार वीरता, साहस आदी का अभाव है इसलिए स्त्री पुरुष के मिलने से ही जीवन पूर्ण होता है।"⁶ इस प्रकार भगवती चरण वर्मा जी ने विवाह जैसे सामाजिक संस्कार के प्रति आधुनिक युवा पीढ़ी की मानसिकता को प्रस्तुत किया है।

भारतीय समाज में नारी की पवित्रता को महत्व दिया जाता है। पारिवारिक जीवन में नारी का योगदान महत्व है। आधुनिक नारी शिक्षा जागरूक और आत्म निर्भर बनना चाहते हैं किंतु सामाजिक संरचनाओं पारिवारिक अपेक्षाओं और परिस्थितियों के कारण अपनी इच्छा के अनुसार जीवन चूमती है वह भावनात्मक रूप से स्वतंत्र होने के आत्मविश्वास से जीना चाहते हैं। इसका चित्रण भगवती चरण वर्मा ने 'थके पांव' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय परिवार में पाली माया का विवाह जब विदुर डॉक्टर से निश्चित करने का प्रयास किया जाता है तब माया स्पष्ट रूप से कहती है कि, "मुझे

विवाह नहीं करना, अंतिम बार में कह देता हूँ। आपने मुझे पढ़ा लिखाकर मनुष्य बनाया है तो मेरे साथ मनुष्यता का व्यवहार कीजिए।" ⁷ इस तरह भगवती चरण बाबूजी ने नारी का स्वरूप में बदलाव चाहते हैं।

भगवती चरण वर्मा ने दहेज प्रथा को कठोर विरोध किया है। उन्होंने 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में इस प्रथा के कारण नारी को किस ढंग से विवश होना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण विद्या पत्र के द्वारा किया है। विद्या का विवाह बीस हजार दहेज देकर सिद्धेश्वरी से किया जाता है। सिद्धेश्वरी की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है किंतु वह खुद तथा उसका पिता बिंदेश्वरी प्रसाद दोनों को भी तन की लिप्सा प्रचुर मात्रा है। इस संदर्भ में विद्या कहते हैं कि, "मैं अपने ससुर वालों से घृणा करने लगी हूँ जिन लोगों ने मेरे घर को तबाह करके रखा है उनके प्रति मुझ में प्रेम कैसे हो सकता है। उसे खानदान का हर आदमी मुझे पिशाच के रूप में दिखता है।" ⁸ इस प्रकार भगवती चरण ने दहेज प्रथा का चित्रण किया है और इस प्रथा की जड़ उखाड़ देनी चाहिए इसकी ओर संकेत भी किया है।

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में अन्य विभाग से उत्पन्न नारी के मन की विडंबना का अभिशाप चित्रण खुलकर किया है। इसका चित्रण पता नहीं 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' रेखा तथा भूले बिसरे चित्र आदि उपन्यासों में मिलते हैं। 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' उपन्यास में अनमोल विवाह से दुखी दांपत्य जीवन की वेदना प्रस्तुत किया है। इसकी बाली बनी है महालक्ष्मी जो उच्च कुल वंश की है। किंतु पश्चात संस्कृति से प्रभावित उमानाथ में भारतीय संस्कृति के प्रति चीढ़ उत्पन्न होने से वह दूसरों की ओर ध्यान नहीं देता है। इससे उन दोनों के वैवाहिक जीवन शोकमय बन जाता है। 'रेखा' उपन्यास में अनमोल विवाह से टूटती हुई वैवाहिक जीवन प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की नायिका रेखा अपने माता-पिता के विरोध को टुकड़ा कर सर्वोच्च से 52 वर्ष के प्राउड प्रोफेसर प्रभाशंकर के साथ विवाह करती हैं जबकि उसकी उम्र 21 वर्ष की है। प्रेम तथा भावना से अंधी हुई रेखा के यह निर्णय बहुत महंगा पड़ता है उसकी कामवासना की पूर्ति जब सफल नहीं होती हैं तब उसका आंतरिक मैन कांटेक्ट हो जाता है प्रभाशंकर एक बार स्पष्ट कहता है कि, "अपने शरीर की भूख तो मैं जानता था लेकिन तुम्हारे शरीर की भी कोई भूख हो सकती है, यह मैं भूल गया था।" ⁹ प्रभाशंकर के यह कथन से रेखा टूट जाते हैं फल स्वरूप वह अनेकों के साथ संबंधी रखते हैं इस प्रकार भगवती चरण में अनमोल विवाह का चित्रण करके सामाजिक जीवन में उत्पन्न विडंबना को प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भगवती चरण वर्मा के लेखन में समय के साथ समस्याओं को नए कलेवर में रखने का हुनर प्राप्त है। समाज और संस्कृति उनके उपन्यासों में प्रमुख स्थान पाते हैं, आशावादी भगवती चरण वर्मा अपने समाज और उसमें घटित होने वाली हर परिस्थिति का सूक्ष्म अंकन करने की क्षमता रखते हैं, उनके कई सारे उपन्यासों में स्त्री जीवन, गरीबी-भुखमरी, ऊँच-नीच का भेदभाव के साथ परम्परा के प्रति लगाव, संस्कृति और धर्म के प्रति यथार्थवादी मानवीय सोच आदि विद्यमान है। उपन्यास जैसा कि अपने समय की आलोचना होता है, उसी तरह की ईमानदारी भगवती चरण वर्मा ने लेखन में दिखाई है। अतः उनके उपन्यास हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना और यथार्थवाद के महत्वपूर्ण दस्तावेज माने जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. आखिरी दांव, भगवती चरण वर्मा, 1991, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली - 6, पृ. 21
2. टेढ़े मेढ़े रास्ते, भगवती चरण वर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, पृ.129
3. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, 1966, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.480
4. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, 1966, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.10
5. थके पांव, भगवती चरण वर्मा, 1969, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 101
6. तीन वर्ष, भगवती चरण वर्मा, 2010, भारती भंडार, इलाहाबाद, पृ. 54
7. थके पांव, भगवती चरण वर्मा, 1969, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.100
8. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, 1966, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 624
9. रेखा, भगवती चरण वर्मा, 1970, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 346